नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांक : 31.12.2018

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज जंगल धूसड़, गोरखपुर में **'छायावाद के सौ वर्ष हुए'** के उपलक्ष्य में **हिन्दी विभाग** ने **विशिष्ट व्याख्यान** का आयोजन किया इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में जयप्रकाश विश्वविद्यालय छपरा, बिहार के **प्रो. सिद्धार्थ शंकर त्रिपाठी** ने कहा कि सोया हुआ समाज नष्टप्राय हो जाता है। साहित्य सांस्कृतिक मंच होता है जिसके माध्यम से जनता में चेतना आती है। छायावादी काव्यान्दोलन साहित्य में महत्वपूर्ण है इसका बुनियादी स्वरूप देश प्रेम है। छायावादी को आचार्य शुक्ल ने उत्थान काल कहा है। छायावादी कवियों द्वारा जो साहित्य दिया गया है। वह साहित्य के बड़े उत्थान का प्रतीक है।

उन्होने कहा कि आधुनिक सभ्यता ने मनुष्य को व्यक्तिवादी बनाया है। व्यक्तिवाद का विकास तभी होगा जब समष्टि का विकास होगा। निराला, पन्त, प्रसाद, महादेवी वर्मा सभी के कवितओ, में देश प्रेम मानवतावाद एवं रहस्यवाद देखने को मिलता है। छायावादी कविताएं प्रकृति प्रेम की कविताएं है। आधुनिक मनुष्य बुद्धिवादी होता है। वह तर्क करता है। छायावादी कविता भावनात्मक होती है। उसमें अन्तर्मन की पीड़ा व्यक्त करने की दृष्टि देता है। आत्माभिव्यक्ति होती है आधुनिकता भेद करती है और संघर्ष पैदा करती है। छायावाद प्रेम और समन्वय की बात करता है।

छायावाद स्त्री के प्रति सम्मान, चेतना और गरिमा देने की बात करता है। भारतीय समाज और राजनीतिक दृष्टि से यह समय महत्वपूर्ण है। जनान्दोलन की बात इसी समय चली। यह दौर बहुत उथल–पुथल का था और इसी समय में छायावाद की महत्वपूर्ण कविताएं भी लिखी गयी जो जागरण गान, मुक्ति का गान ज्योति का गान है, यह शक्ति काव्य भी है। इस कार्यक्रम में हिन्दी विभाग के सभी छात्र/छात्राएं उपस्थित रहे कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग की प्रभारी डॉ. आरती सिंह ने किया।

एक अन्य कार्यक्रम **गृह विज्ञान विभाग** द्वारा **'टेक्निकल टेक्सटाईल'** विषय पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान को सम्बोधित करते **गृह विज्ञान विभाग** की **सहायक आचार्या श्रीमती श्वेता सिंह** ने सर्वप्रथम बताया कि टेक्सटाईल एण्ड क्लोथिंग में अन्तर क्या है। जो रेशों एवं धागो से बुना कपड़ा है वह टेक्सटाईल है तथा कपड़ा वह वस्तु है जो भी हमधारण करते है इसके अतिरिक्त बताया कि वस्त्र में आठ तरह के लेवल लगा होता है। जैसे– content, manfacting, size, brand, trademart/certification, grade, care, smart label.

इसके अलावा आप ने बताया कि किस तरह हम 24 घण्टे वस्त्रों से सम्बन्धित है। वस्त्र की जितनी मांग पहनने के लिए नही है उससे कही अधिक टेक्निकल टेक्सटाईल में मांग है। टेक्निकल टेक्सिटाइल में

Agrotech, Mobitech , Geotech Meditech & protech आता है।

इस कार्यक्रम का आयोजन गृह विज्ञान प्रवक्ता पल्लवी नायक तथा अभार ज्ञापन गृह विज्ञान विभाग की प्रवक्ता किरन सिंह ने किया।

एक अन्य दूसरे कार्यक्रम **समाजशास्त्र विभाग** के तत्वावधान में आयोजित **शोध व्याख्यान प्रतियोगिता** में प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए संयोजक/ विभागाध्यक्ष डॉ0 हनुमान प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि किसी भी विषय को समझने एवं उसे समाज में अभिव्यक्त करने के अनेक माध्यम है। जिसमें शोध व्याख्यान एक महत्वपूर्ण विधा है। जिसके माध्यम से ही समाज की समस्याओं को नये तरीके से समझने उसमें नवाचार, नये–नये, शोध करने का प्रयास किया जाता है। यह लिखित और मौखिक दोनो हो सकता है। इससे छात्र–छात्राओ में शोध करने की क्षमता का विकास होता है। इस कार्यक्रम में निर्णायक मण्डल सदस्य के रूप में इतिहास विभाग के प्रभारी डॉ. महेन्द्र प्रताप सिह एवं वाणिज्य विभाग प्रभारी डॉ. राजेश शुक्ला ने सहभाग दिया।

इस शोध व्याख्यान प्रतियोगिता में 20 छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया। जिसमें स्नातकोत्तर के 06, बी.ए. भाग एक के 12, बी.ए. भाग दो एवं बी.ए. भाग तीन के एक–एक विद्यार्थियों ने अपने विषय से सम्बन्धित विभिन्न शीर्षको जैसे –भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण, भारतीय संयुक्त परिवार में आधुनिक परिवर्तन, धर्म, शिक्षा एवं राजनीति, महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, पंचायती राज की समाज में भूमिका जैसे विभिन्न शीर्षकों पर अपना लिखित शोध पत्र प्रस्तुत किया। इस प्रतियोगिता में स्नाताकोत्तर प्रथम वर्ष की अंजनी चौहान प्रथम स्थान, बी.ए. प्रथम वर्ष के सत्य प्रकाश तिवारी द्वितीय स्थान तथा एम.ए. प्रथम वर्ष की किरन चौहान तृतीय स्थान पर तथा सांत्वना पुरस्कार एम.ए. प्रथम वर्ष की रूपा चौहान को दिया गया।

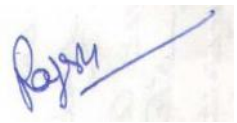

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी